SA–04

June – Examination 2022

B.A. (Part II) Examination

SANSKRIT

(Gadya, Samas Prakaran Tatha Nibandh)

गद्य, समास प्रकरण तथा निबन्ध

Paper : SA-04

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **70***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ' और 'ब' दो खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **4×3½=14**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक वाक्य, एक शब्द या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 3½ अंक का है।

1. (i) 'शिवराजविजयम्' के रचयिता कौन हैं ? इन्हें किस उपाधि से विभूषित किया गया ? इनकी अन्य रचनाओं (किन्हीं **दो**) का नामोल्लेख कीजिए।

(ii) गद्य की चतुर्विध रीतियों का नामोल्लेख कीजिए।

(iii) 'शुकनासोपदेश' किस गद्य विधा का अंश है ? लेखक का नाम भी बताइए।

(iv) 'शिवराजविजयम्' के अनुसार शिवाजी के प्रधान गुप्तचर का क्या नाम है ?

(v) अक्ष्णा काणः रेखाङ्कित पद में तृतीया विभक्ति किस सूत्र से हुई है ?

(vi) 'यूपाय दारू' का समस्त पद लिखकर तथा सूत्रोल्लेख भी कीजिए।

(vii) 'आख्यायिका' की **पाँच** विशेषताएँ बताइए।

(viii) 'शिवराजविजयम्' के प्रधान नायक कौन हैं तथा उसे नायकत्व की किस कोटि में माना जाता है ? 'शिवराजविजयम्' में 'प्रधान रस' कौनसा है ?

खण्ड—ब 4×14=56

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 14 अंक का है।

2. निम्नलिखित में से किसी **एक** गद्य की सप्रसङ्ग व्याख्या हिन्दी भाषा में कीजिए :

(अ) गुरूपदेशश्च नाम पुरुषाणामखिलमलप्रक्षालनक्षममजलस्नानम्, अनुपजातपलितादिवैरूप्यमजरं वृद्धत्वम्, अनारोपितमेदोदोषं गुरूकरणम्, असुवर्णविरचनमग्राम्यं कर्णाभरणम्, अतीतज्योतिरालोकः, नोद्वेगकरः प्रजागरः विशेषेण राज्ञाम्, विरला हि तेषामुपदेष्टारः। अहङ्कार-दाहज्वर-मूर्च्छान्धकारिता विह्वला हि राजप्रकृतिः, अलीकाभिमानोन्मादकारीणि धनानि, राज्य-विषविकार-तन्द्रीप्रदाराजलक्ष्मीः।

अथवा

(ब) आलोकयतु तावत् कल्याणाभिनिवेशीलक्ष्मीमेव प्रथमम्। इयं हि सुभट-खड्गमण्डलोत्पल-वन-विभ्रम-भ्रमरी लक्ष्मीः

क्षीरसागरात् पारिजातपल्लवेभ्यो रागम्, इन्दुशकलादेकान्त-वक्रताम्, उच्चैः श्रवसश्चञ्चलताम्, कालकूटान्मोहनशक्तिम्, मदिराया मदम्, कौस्तुभमणेरतिनैष्ठुर्य्यम्, इत्ये तानि सहवास-परिचयवशाद्विरह विनोदचिह्नानि गृहीत्वेंबोद्गता। नह्येवंविधमपरम्। अपरिचितमिह जगति किञ्चिदस्ति, यथेयमनार्य्या।

3. निम्नलिखित में से किसी **एक** गद्य की सप्रसंग हिन्दी भाषा में व्याख्या कीजिए :

(अ) अथ समापित-सन्ध्यावन्दनादिकिये समायातं गुरौ। भगवन्! श्रूयतां कुतूहलम्। ह्य सम्पादित-सायन्तन कृत्ये अत्रैव कुशाऽऽस्तरणमधिष्ठिते मयि, परितः समासोनेषु छात्रवर्गेषु, धीर समीर-स्पर्शेन मन्दमन्दमन्दोल्यमानासु व्रततिषु समुदिते यामिनी-कामिनी-चन्दनविन्दौ इव इन्दौ-कौमुदी-कपटेन-सुधाधारामिव वर्षति गगने, अस्मन्नीतिवार्तां शुश्रुषुष इव मौनमा-कलयत्सु पतंग-कुलेषु, कैख-विकास-हर्ष-प्रकाश-मुखरेषु-

चञ्चरीकेषु, अस्पष्टाक्षरम्, कम्पमान-निःश्वासम्, श्लथत्कण्ठम्, घर्घरित-स्वनम्, चीत्कारमात्रम्, दीनतामयम्, अत्यवधान-श्रव्यत्वादनुमितदतिष्ठतं क्रन्दनमश्रौषम्।

(ब) कदलीदलकुञ्जायितस्य एतत्कुटीरस्य समन्तात् पुष्पवाटिका, पूर्वतः-परम-पवित्र-पानीयं परस्सहस्र-पुण्डरीक-पटल परिलसितं पतत्रिकुल-कुजित-पूजितं पयः पूरपूरितं सर आसीत्। दक्षिणतश्चेको निर्झर-झर्झर-ध्वनि-ध्वनित-दिगन्तरः फल-पटलाऽऽस्वाद-चपलित-चञ्चु-पतङ्ग-कुलाऽऽक्रमणाधिक-विनत-शाख-शाखि-समूह-व्याप्तः सुन्दर-कन्दरः पर्वतखण्डः आसीत्। यावदेष ब्रह्मचारी वटुरलिपुञ्जमुद्धुय कुसुमकोर-कानवचिनोति, तावत् तस्यैव ब्रह्मचारी सतीर्थ्योऽपरस्त-त्समानवयाः कस्तूरिका-रेणु-रूपित इव श्यामः, सुगन्ध-पटलैरून्निद्रयन्निव निद्रा मन्थराणि कोरक-निकुरम्बकान्तराल-सुप्तानि मिलिन्द-वृन्दानि झटिति समुपसृत्य निवारन् गौरववटुमेवमवादीत्।

4. 'शिवराजविजयम्' के आधार पर तत्कालीन समाज का वर्णन कीजिए।

5. शुकनासोपदेश के आधार पर 'राजलक्ष्मी' का वर्णन कीजिए।

6. 'समास' किसे कहते हैं ? अव्ययीभाव समास का अर्थ बताते हुए "अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्धयर्थाभावात्ययाऽसम्प्रति-शब्द-प्रादुर्भाव-पश्चात्-यथाऽऽनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्त-वचनेषु।" सूत्र की सोदाहरण, लौकिक-अलौकिक विग्रह सहित व्याख्या कीजिए।

7. निम्नलिखित सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए :

(अ) नदीभिश्च।

(ब) शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योप-सङ्ख्यानम्।

8. निम्नलिखित समस्तपद की सूत्रनिर्देशपूर्वक रूपसिद्धि कीजिए :

(अ) हरिहरौ

(ब) घनश्यामः

9. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर हिन्दी भाषा में निबन्ध लिखिए :

(अ) वैज्ञानिकी संस्कृत भाषा

(ब) पर्यावरणम् प्रदूषणञ्च

(स) सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्

(द) परोपकाराय सतां विभूतयः